किल्के रज़ा है ख़ंजरे ख़ूँख़्वार बर्क़ बार अ'अ़दा से कह दो ख़ैर मनाएं ना शर करें

मोलवी सनाबिल रज़ा पीलीभीती शियों का एजेंट ???

गुमराह ओ गुमराहगर मोलवी सनाबिल रज़ा मदारी पीलीभीती के अक़्वाले ख़बीसा

(1) सय्यदना अबु बकर सिद्दीक़ व सय्यदना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म रदिअल्लाहु अ़न्हुम की बारगाहे पाक में गुस्ताख़ाना अंदाज़ में कहा "नबी ने कहा इस्लाम के लिए क्या लाए? तो कोई आधा लाया, कोई पूरा लाया, मगर इतना तो कहा कि घर वालों के लिए अल्लाह ओ रसूल को छोड़कर आया हूँ"

(2) अहले सुन्नत के इज्माई अक़ीदए अफ़ज़लियते मुतलक़ए सिद्दीक़े अकबर के ख़िलाफ़ फ़रेब देते हुए दर पर्दा तफ़्ज़ीलियत फैलाने के लिए कहना कि "अबुबकर को अफ़्ज़लुल बशर बअ़द अल अम्बिया अहले सुन्नत ने मान लिया, सय्यदों ने भी मान लिया मगर मैं कहूँगा तैबा न सही अफ़्ज़ल, मक्का ही बड़ा ज़ाहिद, हम इश्क़ के बंदे हैं क्यूँ बात बढ़ाई है", कोई कहे ये कैसा..... वो बड़ा वो छोटा... एक बात काफ़ी है, हम इश्क़ के बंदे हैं क्यूँ बात बढ़ाई है?

(3) ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी की तौहीन करते हुए कहा "घोड़े देने वाला इस्लाम की जंग में ग़नी है? ऊँट देने वाला इस्लाम की जंग में ग़नी है? इस्लामी जंग के अंदर घोड़े दे दे ग़नी है? ऊँट दे दे ग़नी है? जो सरकार की बारगाह में इस्लाम की ख़ातिर घोड़े दे दे, मअ़ साज़ ओ सामान के दे दे तो वो क़यामत तक ग़नी कहलाए???

(4) अज़ राहे दज्ल ओ फ़रेब अक़ीदए ख़त्मे नबूवत के ख़िलाफ कहीं कह रहे हैं "لا نبی بعدی" हमारा ईमान है कि अब कोई नबी नहीं आएगा लेकिन अ़ली तो आया"

(5) कहीं गुस्ताख़ाना अंदाज़ में जो कि मौलवी सनाबिल की आ़दते क़दीमा है, जंगे जमल व सिफ़्फ़ीन के मुक़द्दस स़हाबा की जमाअ़त को मआ़ज़अल्लाह "ख़ारजी" कहा: "सिफ़्फ़ीन और जमल में जब बात आ गई थी, जब ख़ारजी आ गए थे, तो मौला अ़ली आए थे ज़ुल्फ़िक़ार ले के"

(6) जलीलुल क़द्र सहाबी ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया रदिअल्लाहू अ़न्ह से दिली बुग़्ज़ निकालने को फ़तावा रज़विया की इ़बारत में मअ़नवी तह़रीफ़ करके गुस्ताख़ाना अंदाज़ में कहा और अ़वाम से भी बार बार कहलवाया "अमीरे मुआ़विया से हमारा क्या रिश्ता?

(7) निहायत बेअदबी और तौहीन आमेज़ तेवर में कातिबे वह़ी ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया के मुतअ़ल्लिक़ कहा "अपने बड़े बूढ़ों से कभी सुना लंगरे मुआ़विया?.... कभी सुना उ़र्से मुआ़विया??..... कभी कहते हो अमीरे शाम का सद्क़ा दे दे" "कभी अमीरे मुआ़विया का सद्क़ा मांगते हो", "इसका सद्क़ा, उसका सद्क़ा",..... सुनो!! सद्क़ा मांगने वालों! जाओ मदरसे में और दुआ़ करो यज़ीद की चड्डी मिल जाए, शिमर का पायजामा मिल जाए"

(8) मौला अ़ली व हुज़ूर जिगर गोशए रसूल ह़ज़रते फ़ातमा ज़हरा बतूल रिदवानुल्लाही तआ़ला अ़लैहिम का नामे पाक निहायत बे-अदबी और बेबाकी से लेना,

(9) सुन्नियों की इम्तियाज़ी शनाख़्त "बरेलवी" को बदनाम करने के लिए तफ़्ज़ीलियों, मदारियों की तरह सुबह शाम "बरेलवी, ख़ारजी नासबी,यज़ीदी, रज़वी मुल्ला, कहना

(10) मसलके आ़लाहज़रत जो दीन की पहचान है इसके बारे में कहना "मसलक को एक तरफ़ रखो"

(11) "उ़र्फ़े नास के ऐतबार से, ओलमाए ज़ाहिर की इस्तेलाह़ में बरेलवी बोला जाता है, कोई बरेलवी न भी कहे, मसलके आ़लाहज़रत न भी कहता हो"

(12) मसलके आ़लाहज़रत व ज़ाते आ़लाहज़रत पर तंज़ करना, उनके पाक मसलक की मुख़ालिफ़त, उनकी तअ़लीमात से इनह़िराफ़ करना, अपना शेवा बना लिया

(13) कभी कलामे आ़लाहज़रत व सलामे आ़लाहज़रत पर गुस्ताख़ाना अंदाज़ में कहना कि "आ़लाहज़रत का कलाम पढ़ना फ़र्ज़ तो फ़र्ज़ वाजिब भी साबित कर दो तो एक लाख ग्यारह हज़ार इनाम सलाम नबी का है,, लिखा किसी ने हो, तेरे बाप का क्या"

(14) अहले सुन्नत के ओलमा मशाइख़ की तौहीन करना, गालियाँ देना, उन्हें हिजड़ा पीर, छक्का पीर, ह़रामी पीर कहना, कुत्ता सूअर कहना, ख़ारजी, नासबी, यज़ीदी कहना

(15) सुन्नी सहीहुल अ़क़ीदा लोगों को गालियाँ देना, उन्हें ह़रामी कहना, उन्हें ख़ारजी, नासबी, यज़ीदी कहना सुब्ह़ ओ शाम विर्दे ज़बान

(16) ओलमाए अहले सुन्नत को हमेशा इल्ज़ामबाज़ कहना, निहायत बेशर्मी व बेहयाई से "फ़ाइल ओ मफ़ऊ़ल" की बात कहना

(17) मुहर्रम में हरे कपड़े पहनकर घूमना, राफ़्ज़ियों की तरह मातमी अंदाज़ में निहायत बे-अदबी ओ गुस्ताख़ी से "हु़स्सैन हु़स्सैन, ह़ैदर ह़ैदर " कहना कहलवाना

(18) शिया का मतलब है अ़ली का गिरोह, अ़ली की जमाअ़त, अ़ली के चाहने वाले, अ़ली के दीवाने बताना

(19) मसलके आ़लाहज़रत के मुक़ाबिल अज़राहे इग़वाए मुस्लिमीन मसलके ग़रीब नवाज़ ज़िन्दाबाद का नारा लगाना, लगवाना

(20) ज़ाते आ़लाहज़रत व कुतुबे आ़लाहज़रत जो अहले सुन्नत का मरकज़ है, उसके मुक़ाबिल दुश्मनान ओ ह़ासिदीने मसलके आ़लाहज़रत की मिस्ल बार बार ये कहना कि हमारा मरकज़ गुम्बदे खज़रा, हमारा मरकज़ गुम्बदे खज़रा, हमारा मरकज़ अजमेरे मुअ़ल्ला

(21) "हु़सैन अ़लैहिस्सलाम, ह़ुसैन अ़लैहिस्सलाम..मरो, मरे?? गिरे?? गिर गए?? अब पटकी खाओ.. अ़लैहिस्सलाम बोलने पर अगर कुछ बोले नंगा कर दूँगा जैसे माँ के पेट से आए थे" (22) गुस्ताख़, बाज़ारू, टपोरियों की तरह बोलना कि "यज़ीदियों से पंगा कर्बला में हु़सैन ने लिया था"

(23) तरावीह़ पढ़ाने के लिए हाफ़िज़े क़ुरआन की दरख़्वास्त करने पर सुन्नी सहीहुल अ़क़ीदा ह़शमती लोगों को कहना "तरावीह़ क्यूँ पढ़ोगे तुम तो पंडित हो"

(24) अबु तालिब के मस'ले में हुज़ूर आ़लाहज़रत के फ़तावा बिलख़ुसूस شرح المطالب فی مبحث ابی طالب से उ़दूल ओ इनह़िराफ़ करते हुए कहना "तुम मौला अ़ली के बाप पर भौंकते हैं" (25) सुन्नी मुसलमानों को कहना "तुमसे अच्छा तो हमारे कानपुर का पंडित जोगी है जो मुहर्रम में तअ़ज़िया सर पर उठाकर कहता है एक नारा हैदरी"

(26) अपने चचा के उ़र्से चेहलुम में कहा कि 1 मुहर्रम से 10 मुहर्रम तक ढोल बजाना, कितने मर्द के पूत हैं हाथ उठाओ, ऐसा कहकर सबसे हाथ उठवाये।

(27) इन्हीं के बिरादर मोलवी शमाइल ने कहा कि "अज़हरी मियाँ कह रहे हैं नबी को बेबस (मआ़ज़अल्लाह) जबकि हुज़ूर ताजुशशरिया ने किसी तक़रीर या तह़रीर में कभी नहीं कहा बल्कि ऐसा कहने वालों पर कुफ़्र का हुक्म दिये, तो क्या ये हुक्म उन पर ना लौटा??

(28) मुम्बई के प्रोग्राम में अपने वालिद की मौजूदगी में भरे मजमे में हुज़ूर ताजुश्शरिया और उनके मुरीदों को ह़रामी कहा।

(29) लफ़्ज़ "बरेलवी" सुन्नियों के ईमान की पहचान, उनका अ़लामती निशान, इस्तेलाहे "बरेलवी" की इस इनफ़िरादियत व मअ़नवियत को ख़त्म करने और सुन्नियों के इस इम्तियाज़ी निशान को मिटाने के लिए शातिराना हमला करते हुए लफ़्ज़ "बरेलवी" को सलासिले बैअ़त के नामों के साथ बार बार लाज़मी तौर पर बोलना कि "रज़वी हो कि ह़शमती हो कि बरेलवी हो कि चिश्ती हो, बरकाती हो, अशरफ़ी हो", जिससे धीरे धीरे ये मुग़ालतए शैतानी अ़वाम के दिलों में घर कर जाए कि बरेलवी, ईमान की पहचान नहीं बल्कि किसी सिलसिले में मुरीद होने वाले को कहते हैं, और अ़वाम ये कहने लगे कि मैं बरेलवी नहीं हूँ मैं तो क़ादरी या चिश्ती या नक़्शबंदी सोहरवरदी हूँ, या ह़शमती या रज़वी या अशरफ़ी या बरकाती हूँ।

(30) तक़रीरों में अपने बारे में ये कहना कि "तुम समझे डुप्लीकेट राफ़्ज़ी शिया होंगे"

(31) कभी हुज़ूर ग़ौसे पाक का नामे पाक गुस्ताख़ाना अंदाज़ में लेना।

(32) ढोल तबला के साथ, मज़ामीर वाली क़व्वाली को जाइज़ कहना।

(33) अहले सुन्नत के मदारिस व ख़ानक़ाहों के ख़िलाफ़ बार बार बोलना।

सुबूत के लिए सनाबिल रज़ा पीलीभीती की गुमराही व गुस्ताखी की 50 वीडियोज़ के लिए लिंक पर क्लिक करें या क्यू आर कोड स्कैन करें

https://www.dropbox.com/scl/fi/7gc90uow5ovrse8q40ywl/VN20240823_013041.mp4?rlkey=ztii152ejv6c0lrc520j4r7h5&st=p94qll72&dl=0

नोट : मज़ीद मालूमात के लिए ओलमाए अहलेसुन्नत की तहरीरात, किताबें मुलाहेज़ा करें बिलख़ुसूस★हादिमे क़स्रे तफ़्ज़ीलियत ओ मदारियत, असदुस्सुन्नह अ़ल्लामा मुफ़्ती अबुन्नासेह मुहम्मद ज़ैनुल आ़बिदीन साहब क़िब्ला ★दैग़ामे रज़वियत मुफ़्ती अबुल'मुज़फ़्फ़र उ़बैदुल ह़श्मत मुबारक ह़ुसैन बरैलवी (ख़लीफ़ा साहब) ★पासबाने सुन्नियत मुफ़्ती अबुल'मंसूर फ़ज़्ले रसूल लखनवी ★अ़ताए ग़रीब नवाज़ अ़ल्लामा सूफ़ी ख़ादिम रज़ा फ़रहाद हाफ़िज़ाबादी ★मक़बूले बारगाहे क़ादरियत हुज़ूर मुफ़्ती अबुस्सवारिम इब्राहीम रज़ा ख़ान काठियावाड़ी ★आबरूए अहले सुन्नत अ़ल्लामा मुफ़्ती नअ़लैन रज़ा साहब क़िब्ला बिलग्रामी ★यादगारे अस्लाफ़ अ़ल्लामा मुफ़्ती अबुल'हसनैन सुल्तान महमूद नूरी

तह़रीक ए तह़फ़्फ़ुजे सुन्नियत (T.T.S.) मुंबई